इकाई 11 सतत और व्यापक मूल्यांकन

संरचना

11.1 प्रस्तावना

11.2 उद्देश्य

11.3 व्यापक मूल्यांकन

11.4 सतत मूल्यांकन

11.5 व्यापक और सतत मूल्यांकन के प्रकार्य

11.6 दत्त कार्य (एसायनमैंट)

11.7 दत्त कार्यों के प्रकार

11.8 आवधिक और वार्षिक परीक्षाएँ

11.9 समंकों संबंधी रिपोर्ट देना

11.10 प्रगति रिपोर्ट का महत्व

11.11 समंकों की व्याख्या

11.12 विद्यार्थियों की पार्श्विका (प्रोफाइल)

11.13 संचयी रिकॉर्ड

11.14 सांराश

11.15 अभ्यास कार्य

11.16 चर्चा के बिंदु

11.17 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.18 कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.1 प्रस्तावना

विद्यालय में मूल्यांकन के अंतर्गत छात्रों के व्यक्तित्व के विकास संबंधी लगभग सभी क्षेत्रों को शामिल किया जाता है। इसमें शैक्षिक,गैर-शैक्षिक दोनों क्षेत्रों को शामिल किया जाना चाहिए, अर्थात् इसे अत्यधिक व्यापक होना चाहिए। यह शिक्षा के लक्ष्यों के अनुसार कार्य करता है। मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है और छात्रों की क्षमता और उनकी कमियों को बार-बार बताता है ताकि उन्हें अपने आप को समझने और सुधारने का बेहतर अवसर मिलता रहे। यह शिक्षकें को भी प्रतिपुष्टि (फीडबैक) उपलब्ध कराता है ताकि वे अपनी शिक्षण संबंधी कार्य नीतियों में सुधार कर सके। इस इकाई में आप व्यापक और सतत मूल्यांकन और निर्धारण के लिए सामान्यतः प्रयुक्त युक्तियों अर्थात् एसाइनमेंट आवधिक और वार्षिक परीक्षाओं के बारे में अध्ययन करेंगे। इस इकाई में मूल्यांकन संबंधी रिकार्डो के अनुरक्षण, उनके महत्व और मूल्यांकन रिपोर्टों की व्याख्या के बारे में भी बताया गया है।

11.2 उद्देश्य

इस इकाई के अंत में आप इस योग्य हो जाएँगे कि :

- सतत और व्यापक मूल्यांकन का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे;

- शैक्षिक और गैर-शैक्षिक विषय से क्या अभिप्राय है इसे बता सकेंगे;
- संतत और व्यापक मूल्यांकन की आवश्यकता की विवेचना कर सकेंगे;
- दत्त कार्य (एसाइनमेंट), आवधिक और वार्षिक परीक्षाओं का स्वरूप और उनके प्रयोगों की व्याख्या कर सकेंगे;
- अलग-अलग विद्यार्थी के मूल्यांकन संबंधी रिकार्डों के अनुरक्षण का महत्व स्पष्ट कर सकेंगे;
- प्रगति रिपोर्ट, विद्यार्थी पार्श्विका (प्रोफाइल) और संचयी रिकार्डो के महत्व की समीक्षा कर सकेंगे;
- विद्यार्थियों को ग्रेड देने, उनके स्थापन तथा मार्गदर्शन में सहायता के लिए रिकार्ड किए गए मूल्यांकन संबंधी आँकड़ों की व्याख्या कर सकेंगे;
- स्व-निर्देशन और आत्म सुधार के लिए रिकार्ड किए गए मूल्यांकन का प्रयोग करने में विद्यार्थियों की सहायता कर सकेंगे; तथा
- विभिन्न प्रयोक्ताओं : विद्यार्थियों, अभिभावकों, प्रशासकों तथा नियोक्ताओं, के लिए मूल्यांकन रिपोर्टों के महत्व की समीक्षा कर सकेंगे।

11.3 व्यापक मूल्यांकन

शिक्षा लक्ष्य निदेशित होती है और शिक्षण निष्पत्तियों की जाँच प्राप्ति के रूप में की जा सकती है। प्रत्येक शैक्षिक कार्यक्रम का लक्ष्य विद्यार्थी के व्यक्तित्व का समग्र विकास करना होना चाहिए। इसलिए विद्यालय में दिए जाने वाले शिक्षण संबंधी अनुभवों से अपेक्षित लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता मिलनी चाहिए। किसी भी शिक्षक अथवा शैक्षिक योजनाकार को किसी शैक्षिक कार्यक्रम के लिए उपयुक्त विषय-वस्तु और संगत शैक्षिक अनुभव का निर्णय लेते समय (अर्थात् पाठ्यक्रम) शैक्षिक और गैर-शैक्षिक निष्पत्तियों को उस कार्यक्रम के अपेक्षित व्यवहार के रूप में बताना चाहिए।

शैक्षिक तथा गैर-शैक्षिक क्षेत्र

वह वांच्छनीय व्यवहार, जिसका संबंध अध्ययन विषयों के ज्ञान, अवबोध तथा किसी अनभिज्ञ अवस्थिति में उन्हें उपयोग करने संबंधी योग्यता से है, शैक्षिक क्षेत्र से संबंधित कहा गया है। ऐसा व्यवहार जिसका संबंध विद्यार्थी की अभिवृत्तियों, रुचियों, वैयक्तिक और सामाजिक गुणों तथा उसके स्वास्थ्य से संबंधित गैर-शैक्षिक क्षेत्र में उल्लिखित किया जाएगा।

शैक्षिक और गैर-शैक्षिक क्षेत्रों से संबद्ध उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विद्यार्थी की प्रगति के मूल्य-निर्धारण की प्रक्रिया 'व्यापक मूल्यांकन' कही जाती है। यह देखा गया है कि प्राय मात्र शैक्षिक तत्व, जैसे किसी विषय के तथ्यों, विचारों, सिद्धांतों आदि की जानकारी और अवबोध तथा सोचने के कौशल, का ही निर्धारण किया जाता है। गैर-शैक्षिक तत्वों को या तो मूल्यांकन प्रक्रिया से बिल्कुल निकाल दिया जाता है या उन पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। मूल्यांकन को व्यापक रूप देने के लिए शैक्षिक व गैर-शैक्षिक दोनों क्षेत्रों को उचित महत्व देना चाहिए। विकास के गैर-शैक्षिक पक्ष के निर्धारण संबंधी साधारण और व्यवस्थित तरीकों को व्यापक मूल्यांकन स्कीम में अनिवार्यतः शामिल किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के 1992 में संशोधित प्रलेख में भी यह उल्लिखित किया गया कि इस मूल्यांकन स्कीम में शैक्षिक विषयों और गैर-शैक्षिक क्षेत्रों के सभी अधिगम अनुभवों को शामिल किया जाना चाहिए।

व्यापक मूल्यांकन में विभिन्न प्रकार की तकनीकों और साधनों के उपयोग की आवश्यकता होगी। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि विद्यार्थी के विभिन्न विशिष्ट विषयों का कतिपय विशेष तकनीकों से ही मूल्यांकन किया जा सकता है। ऑकड़ों के संग्रहण के लिए विभिन्न प्रकार के साधनों/उपकरणों में भी उतनी ही भिन्नता होती है। मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त विभिन्न साधनों एवं तकनीकों का इस पाठ्यक्रम की अन्य इकाईयों में वर्णन किया गया है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) ने विद्यालय मूल्यांकन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया है। इस संस्थान ने विद्यालय के लिए मूल्यांकन स्कीमें तैयार की हैं और शिक्षकों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले विभिन्न साधनों के सुझाव दिए हैं। उदाहरण के तौर पर, विद्यालय मूल्यांकन की एक स्कीम की रूपरेखा नीचे दी गई है जिसमें मूल्यांकन किए जाने वाले विषयों एवं प्रस्तावित तद्नुरूपी तकनीकों और साधनों को भी दर्शाया गया है।

मूल्यांकन की प्रस्तावित स्कीम

छात्र	विषय	मूल्यांकन की तकनीकें	मूल्यांकन के साधन
शैक्षिक	**1. पाठ्येतर कार्यकलाप** (करिक्यूलर) के क्षेत्र – जानकारी/ज्ञान – अवबोध – ज्ञान का प्रयोग – कौशल आदि	– लिखित – मौखिक – प्रायोगिक	– प्रश्नपत्र – निदान परीक्षण – मानकीकृत उपलब्धि परीक्षण – दत्त कार्य – प्रश्नावली
गैर-शैक्षिक	**2. शारीरिक स्वास्थ्य** – स्वास्थ्य संबंधी मूल ज्ञान – शारीरिक स्वस्थता	– स्वास्थ्य जाँच – शिक्षक द्वारा प्रेंक्षण	– निर्धारण मापनी – डाक्टर के अपने उपस्कर
	3. **आदतें** – स्वास्थ्य संबंधी आदतें – अध्ययन संबंधी आदतें – कार्य संबंधी आदतें	– प्रेक्षण	– वृत्तांत अभिलेख – निर्धारण मापनी – जांच सूची
	4. अभिरुचियाँ – साहित्यिक अभिरुचि – कलात्मक अभिरुचि – वैज्ञानिक अभिरुचि – संगीतिक अभिरुचि – सामाजिक अभिरुचि	– प्रेक्षण	– वृत्तांत अभिलेख – निर्धारण मापनी – जांच सूची
	5. **अभिवृत्तियाँ** – अध्ययन के प्रति अभिवृत्ति – शिक्षकें के प्रति अभिवृत्ति – सहपाठियों के प्रति अभिवृत्ति	– प्रेक्षण	– वृत्तांत अभिलेख – जांच सूची – निर्धारण मापनी

छात्र	विषय	मूल्यांकन की तकनीकें	मूल्यांकन के साधन
	– विद्यालय की सम्पत्ति के प्रति अभिवृत्ति		
	6. **चरित्र निर्माण संबंधी गुण/ महत्वपूर्ण बातें** – सफाई – सत्यप्रियता – परिश्रमी – समानता – सहयोग	– प्रेक्षण	– वृत्तांत अभिलेख – जांच सूची – निर्धारण मापनी
	7. **पाठ्य सहगामी कार्यकलापों में भाग लेना** – क्रीड़ा, खेलकूद (स्पोर्टस) व्यायाम आदि, – साहित्यिक और वैज्ञानिक गतिविधियाँ – सांस्कृतिक, सामाजिक और सामुदायिक सेवा संबंधी कार्यकलाप	– प्रेक्षण	– वृत्तांत अभिलेख – जांच सूची – निर्धारण मापनी

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) नीचे दिये गये स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. विद्यालय में व्यापक मूल्यांकन का क्या महत्व है?

....

....

....

....

11.4 सतत मूल्यांकन

मूल्यांकन के परिणाम : प्रभावी शिक्षण-अधिगम के मूल-तत्व : एक शिक्षक के रूप में हमारी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हमारे अनुदेशात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हो पाई है। वैसे भी उद्देश्यों की प्राप्ति की प्रगति का निर्धारण और मूल्यांकन किया ही जाना चाहिए, नहीं तो हम यह नहीं जान पाएँगे कि हम कहाँ पहुँचे हैं और हमें कहाँ पहुँचना है।

विद्यालय स्तर पर मूल्यांकन के प्रयोजनों में से एक मुख्य प्रयोजन शैक्षिक विषयों में छात्रों की उपलब्धि में सुधार करना और विद्यालयी शिक्षा के उद्देश्यों के अनुरूप उसमें सही आदतों और अभिवृत्तियों का विकास करना है।

शैक्षिक मूल्यांकन की विद्यालय में एक महत्वपूर्ण भूमिका है। यह अनुदेशात्मक कार्यक्रम का महत्वपूर्ण अंतरंग भाग हैं। यह ऐसी महत्वपूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध कराता है जो विभिन्न शैक्षिक निर्णयों के लिए एक आधार प्रदान करती है। शैक्षिक मूल्यांकन में मुख्य बल विद्यार्थी और उसकी अधिगम-प्रगति पर दिया जाता है।

विद्यार्थी कहाँ है और वह किस प्रकार प्रगति कर रहा है, यह जानकारी शिक्षक द्वारा प्रभावी-शिक्षण और विद्यार्थी द्वारा प्रभावी-अधिगम का मूलभूत तत्व है।

इसके अतिरिक्त 'शिक्षा की राष्ट्रीय नीति' दस्तावेज (NPE 1986) में भी इस बात पर बल दिया गया कि विद्यालय स्तर पर मूल्यांकन रचनात्मक अथवा विकासशील होना चाहिए। क्योंकि इस स्तर पर विद्यार्थी अधिगम की विकासात्मक अवस्था में होता है। चूँकि बच्चा इस समय स्वयं विकास की रचनात्मक अवस्था में होता है इसलिए अधिगम के सुधार पक्ष पर जोर दिया जाना चाहिए।

हम किसी विद्यार्थी द्वारा अनुदेशात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति के वर्तमान स्तर और उसकी प्रगति का कैसे पता लगा सकते हैं? अनुदेशात्मक उद्देश्यों के सतत मूल्यांकन द्वारा उद्देश्यों की प्राप्ति के वर्तमान स्तर तथा प्रगति की दिशा का पता लगाया जा सकता है।

यदि अध्यापक से यह अपेक्षा है कि वह अधिगम अनुभवों में सुधार के लिए अपनी अध्यापन विधियों में वांच्छनीय परिवर्तन करे तो इसके लिए सतत मूल्यांकन अनिवार्य होगा। अनुदेशात्मक उद्देश्यों के संदर्भ में विद्यार्थी की प्रगति का निर्धारण करने की दृष्टि से उनकी अनुक्रियाओं का रिकार्ड रखना महत्वपूर्ण व उपयोगी होगा।

11.5 व्यापक और सतत मूल्यांकन के प्रकार्य

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में मूल्यांकन के अंतर्गत शैक्षिक और गैर-शैक्षिक पहलुओं पर ध्यान दिया जाना अपेक्षित होता है। यदि विद्यार्थी किसी क्षेत्र में कमज़ोर है तो नैदानिक मूल्यांकन और उपचारी प्रयास किए जाने चाहिए। सतत और व्यापक मूल्यांकन के अंतर्गत आने वाले महत्वपूर्ण प्रकार्य या उद्देश्य नीचे दिए जा रहे हैं :

i) सतत मूल्यांकन से विद्यार्थी की प्रगति की सीमा और स्तर के निर्धारण में नियमित सहायता मिलती है (विशिष्ट शैक्षिक और गैर-शैक्षिक क्षेत्रों के संदर्भ में योग्यता और उपलब्धि)।

ii) सतत मूल्यांकन से कमज़ोरियों का निदान किया जा सकता है और इसकी सहायता से शिक्षक प्रत्येक अलग-अलग विद्यार्थी की शक्ति, कमज़ोरियाँ और उसकी आवश्यकताओं का पता लगा सकता है। इससे शिक्षक को तात्कालिक प्रतिपुष्टि (फीडबैक) प्राप्त होती है जो इसके आधार पर यह निर्णय करता है कि क्या किसी इकाई विशेष के विषय का पूरी कक्षा में पुनः शिक्षण किया जाए अथवा क्या कुछ विद्यार्थियों को उपचारी अनुदेश दिए जाने चाहिए।

iii) इससे शिक्षक को प्रभावी शिक्षा कार्यनीति तैयार करने में सहायता मिलती है।

iv) बहुधा कुछ व्यक्तिगत कारणों से, पारिवारिक समस्याओं से या समायोजन संबंधी समस्याओं के कारण विद्यार्थी अपनी पढ़ाई के प्रति लापरवाह होने लगते हैं। जिसके परिणामस्वरूप उनकी उपलब्धि में अचानक गिरावट आने लगती है। इन्हें जाँचने के लिए सतत व व्यापक मूल्यांकन की आवश्यकता है।

   यदि शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक तीनों विद्यार्थी की उपलब्धि में इस प्रकार आने वाली अचानक गिरावट को नहीं जान पाते और विद्यार्थी की पढाई के प्रति लापरवाही काफी समय तक बनी रहती है तो उपलब्धि कम होने लगती है और विद्यार्थी के अधिगम में एक स्थायी न्यूनता आ जाती है।

सतत मूल्यांकन से विद्यार्थी, शिक्षक और अभिभावकों के समय-समय पर उपलब्धि के प्रति जागरूक बने रहने में सहायता मिलती है। वे उपलब्धि में होने वाली किसी प्रकार की गिरावट के संभावित कारणों के प्रति सतर्क बने रह सकते हैं और समय पर उसके उपचारी प्रयास कर सकते हैं, जिससे विद्यार्थी की प्रगति संबंधी परिणाम के अपने अपेक्षित स्तर को बनाए रखने में सहायता मिलती है।

v) सतत् मूल्यांकन से विद्यार्थियों को अपनी शक्ति और कमज़ोरियों की जानकारी मिलती है। इससे विद्यार्थी को उसके अध्ययन के संबंध में स्पष्ट वास्तविक जानकारी मिलती है। इससे विद्यार्थी को अपनी अच्छी अध्ययन आदतें विकसित करने, गलतियों को सुधारने तथा अपेक्षित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयासरत होने की प्रेरणा मिलती है। इससे प्रत्येक व्यक्ति को अनुदेश के विशेष क्षेत्रों का पता लगाने में सहायता मिलती है जिनकी ओर अधिक ध्यान दिया जाना अपेक्षित है।

vi) सतत और व्यापक मूल्यांकन अभिक्षमता और अभिरुचि के क्षेत्रों को सुनिश्चित करता है। इससे अभिवृत्ति, चरित्र, मुख्य प्ररूप के स्वरूप में परिवर्तन का पता लगाने में सहायता मिलती है।

vii) इससे भविष्य के लिए अध्ययन क्षेत्रों, पाठ्यक्रमों और व्यवसाय के चयन के संबंध में निर्णय लेने में सहायता मिलती है।

viii) यह शैक्षिक और गैर-शैक्षिक क्षेत्रों में विद्यार्थी की प्रगति संबंधी सूचना/रिपोर्ट उपलब्ध कराता है और इस प्रकार शिक्षार्थी की भावी सफलता का अनुमान लगाने में सहायता मिलती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) नीचे दिये गये स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

2 प्रभावी शिक्षण और अधिगम के लिए सतत मूल्यांकन की भूमिका का वर्णन करें।

....

....

....

सतत् और व्यापक मूल्यांकन के अंतर्गत किए जाने वाले कार्यों पर चर्चा कर लेने के बाद हम सामान्यतः प्रयोग की जाने वाली युक्तियों जैसे सत्रीय कार्य (एसाइनमेंट) पर चर्चा करेंगे।

11.6 दत्त कार्य (एसायनमैंट)

यह कहना सही होगा कि दत्त कार्य का प्रयोग दोनों प्रयोजनों से अर्थात् अधिगम और मूल्यांकन के लिए किया जाता है। अब हम अधिगम और सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के लिए दत्त कार्य के प्रकार्यों पर चर्चा करेंगे।

कक्षा में शिक्षण के दौरान प्रायः शिक्षक किसी विषय के सभी महत्वपूर्ण पक्षों की पूर्ण विवेचना नहीं कर पाते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे महत्वपूर्ण कौशल भी होते हैं जिन का शिक्षण के लिए निर्धारित समय सीमा के अंदर मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है, जैसे प्रेक्षण आंकड़ों की प्रस्तुति अथवा क्रमबद्ध रूप में सूचना देना, किसी विषय के महत्वपूर्ण पक्षों को संगठित करना, मौलिकता, सृजनात्मकता आदि।

इन सभी योग्यताओं और कौशलों की उपलब्धि के विषय में विभिन्न पुस्तकों से गहन अध्ययन की आवश्यकता होती है और उस प्रसंग से संबंधित अवधारणाओं को समझने के लिए अधिक अभ्यास और कवायद (ड्रिल) की आवश्यकता होती है। प्रायः अलग-अलग स्त्रोतों से और अधिक सूचनाएं एकत्र करने की आवश्यकता होती है। कभी-कभी तो विषय के स्वरूप के आधार पर प्रेक्षण आंकड़ें लेने की भी आवश्यकता होती है।

इन सभी योग्यताओं और कौशलों का मूल्यांकन करने के लिए विद्यार्थियों को कुछ विशेष प्रकार के दत्त कार्य सौंपे जाते हैं अर्थात् जिन्हें शिक्षक द्वारा दिए गए निर्देश के अनुसार विद्यार्थी द्वारा घर पर इन्हें को पूरा किया जाना होता है।

11.7 दत्त कार्यों (एसायनमैंट) के प्रकार

विषयवस्तु और कौशलों के क्षेत्रों में दत्त कार्यों का प्रयोग एक अधिगम युक्ति तथा मूल्यांकन उपकरण के क्षेत्र में मूल्यांकन साधन के रूप में किया जाता है। दत्त कार्य के प्रयोजन के आधार पर दत्त कार्यों के स्वरूप भी अलग-अलग होते हैं। अब हम इन कार्यों द्वारा पूरे किए जाने वाले प्रयोजनों के आधार पर उनके प्ररूपों के संबंध में चर्चा करेंगे।

i) **कक्षा के पाठ का विस्तार** : अधिकतम मामलों में शिक्षण अवधि अंत में **दत्त कार्य** दिया जाता है जो एक प्रकार से पाठ का विस्तार होता है। यह एक ऐसा पाठ होता है जो विद्यार्थी द्वारा घर पर अपनी सुविधानुसार समय निकाल कर शिक्षक द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार पूरा किया जाता है। इस प्रकार यह अतिरिक्त अधिगम अनुभव प्रदान करता है जो संक्षिप्त कक्षा-अवधि में संभव नहीं होता।

   इससे कक्षा में जो कुछ कराया जाता है उसका अतिरिक्त अभ्यास भी हो जाता है और उसका नई स्थिति में प्रयोग भी हो जाता है और इसके फलस्वरूप अवधारणाओं के स्पष्टीकरण तथा ज्ञान में वृद्धि हो जाती है।

ii) **स्व-मूल्यांकन** : जब कक्षा में पहले से पढ़ाए गए विषय के अनुप्रयोग पर शिक्षक द्वारा कुछ गृहकार्य दिया जाता है तो विद्यार्थी द्वारा स्व-मूल्यांकन का एक अवसर मिलता है जिससे यह पता चलता है कि वह विद्यालय में पढ़ाए गए नए संप्रत्ययों को कितनीं अच्छी तरह से समझ गया है।

iii) **विशिष्ट प्रकरणों का विस्तृत अध्ययन** : अधिकांश मामलों में विद्यार्थी को विशिष्ट प्रकरण से संबंधित दत्त कार्य दिए जाते हैं जिसमें विद्यार्थी को उस विषय के महत्वपूर्ण पक्ष पर एक रिपोर्ट लिखने के लिए कहा जाता है। इसके लिए उस विषय से संबंधित पुस्तकों को पढ़ने, संगत जानकारी प्राप्त करने अभिमतों और व्यक्तिगत अनुभवों का संश्लेषीकरण करने की आवश्यकता होती है। विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे संबंधित पूरी सूचना को किसी क्रमबद्ध रूप में संगठित करें।

कभी-कभी दत्त कार्य (एसाइनमैंट) कुछ प्रेक्षण आकड़ों, मापों अथवा वस्तुओं के संग्रह पर आधारित हो सकते हैं, जिन्हें व्यवस्थित या सारणीबद्ध किया जाता है और यह देखा जाता है कि क्या इनमें कोई प्ररूप उभर के आता है अथवा नहीं। इसमें विद्यार्थी को अपनाई गई कार्यविधि, दत्तों अथवा सूचना की प्रस्तुति, उसका विश्लेषण और दत्त कार्य की महत्वपूर्ण निष्पत्तियों की रिपोर्ट तैयार करने के लिए कहा जाता है।

इसके अतिरिक्त यह अच्छा रहेगा यदि किसी विद्यार्थी अथवा विद्यार्थियों के समूह द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट को उनमें से एक विद्यार्थी पूरी कक्षा में प्रस्तुत करें। उस पर चर्चाएँ भी की जाएँ। इसमें शिक्षक और अन्य विद्यार्थी उन दत्त कार्यों पर आधारित प्रश्न पूछ सकते हैं तथा विद्यार्थी द्वारा प्रश्नों के उत्तर देने में कोई समस्या होने पर शिक्षक उसे स्पष्ट कर सकता है और उदाहरण सहित व्याख्या भी कर सकता है।

दत्त कार्य का मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण पहलू है। जब कोई एसाइनमैंट दी जाए तो यह देखा जाए कि अनुदेशात्मक उद्देश्यों से संबंधित इसका कुछ आधार है या नहीं। उस दत्त कार्य का उन

उद्देश्यों की दृष्टि से मूल्यांकन किया जाना चाहिए तथा यह पता लगाना चाहिए कि कितने उद्देश्य पूरे हो सके हैं। दत्त कार्य का मूल्यांकन किया जाए और उसके लिए ग्रेड दिया जाए, अर्थात् उसका कोटि निर्धारण किया जाए। दत्त कार्य की कोटि को अंतिम मूल्य निर्धारण में शामिल किया जाना चाहिए।

यह भी ध्यान रहे कि यह आवश्यक नहीं कि दत्त कार्य सदैव रुचिकर हो परंतु यह आवश्यक होना चाहिए कि वे सदैव सार्थक हों।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) नीचे दिये गये स्थान मे अपने उत्तर लिखिए।

ख) इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

3. अपने विद्यालय में पढ़ाए जा रहे किसी विषय के लिए कोई सत्रीय कार्य तैयार कीजिए और उसका प्रयोजन स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

11.8 आवधिक और वार्षिक परीक्षाएँ

परीक्षण

कोई भी परीक्षण विद्यार्थी को इसलिए दिया जाता है कि उसके द्वारा उसे कोई ऐसी स्थिति प्रस्तुत की जाए जिससे वह अपनी उपलब्धि व योग्यताओं का एक विशेष प्रकार से निदर्शन कर सके। इनके द्वारा हम उनकी उपलब्धि की जाँच शैक्षिक और गैर-शैक्षिक क्षेत्रों में कर सकते हैं। इस प्रकार के परीक्षण मानकीकृत परीक्षण अथवा अध्यापक-निर्मित परीक्षण दोनों हो सकते हैं। हम विभिन्न प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग करते हैं, जैसे पूर्व परीक्षण/ प्रवेश परीक्षण, यूनिट परीक्षण, नैदानिक परीक्षण, संयुक्त यूनिट परीक्षण, आवधिक परीक्षण, वार्षिक परीक्षण/ अंतिम (अंतरस्थ) परीक्षा।

हम यह कैसे पता लगाएँ कि विद्यार्थी ने कितना कुछ सीखा है तथा उसने जो सीखा है वह सही है अथवा गलत? इसके लिए हमें उसके अधिगम का परीक्षण करना होगा। ऐसा आवधिक परीक्षणों के द्वारा किया जा सकता है।

आवधिक परीक्षाएँ

जब कोई शिक्षक यह निर्धारित करना चाहे कि विद्यार्थी ने किसी पाठ या यूनिट में जो कुछ पढ़ाया गया था वह सब सीखा लिया है, तथा उसे और क्या कठिनाइयाँ हैं, इसका पता लगाने की युक्ति को आवधिक परीक्षण कहा जाता है। जब यह आवधिक परीक्षण प्रत्येक विषय/यूनिट के शिक्षण के बाद दिए जाते हैं तो हम यह स्पष्टतः जान सकते हैं कि छात्र ने कितना सीखा है या उसकी कितनी प्रगति हुई है।

छात्र की शक्ति और कमज़ोरी की इस जानकारी से शिक्षकों द्वारा प्रभावी शिक्षण और छात्र द्वारा प्रभावी अधिगम संबंधी योजना तैयार करने में सहायता मिलती है।

पिछले अनुभाग में हमने सतत मूल्यांकन के बारे में पढ़ा है। सतत मूल्यांकन आवधिक परीक्षणों द्वारा किया जाता है। कभी-कभी जब अधिकारीगण इस बात पर बल देते हैं कि छात्र की प्रगति संबंधी रिपोर्ट समय-समय पर अभिभावकों को देना अनिवार्य है तो इसके लिए आवधिक परीक्षण यंत्रवत् आयोजित किए जाते हैं ताकि परीक्षण परिणाम अभिभावकों को सूचित करने की

कक्षा के कार्यकलापों को परीक्षणोन्मुख बनाए जाने की संभावना रहती है। अध्यापन में इस प्रकार का कार्य-व्यापार जो मात्र परीक्षणोन्मुख हो, निरुत्साहित किया जाना चाहिए। सामान्यतः विद्यार्थी को यह समझ में आ जाना चाहिए कि मूल्यांकन के परिणामों का उपयोग किस प्रकार से किया जाएगा। यदि वह यह नहीं समझा पाता तो उसमें एक प्रकार की उत्सुकता अथवा परीक्षण का भय विकसित हो जाता है।

आवधिक परीक्षणों का निष्पादन

आवधिक परीक्षाओं के निष्पादन को व्यवस्थित रूप से रिकार्ड किया जाना चाहिए। आवधिक परीक्षा में व्यक्तिगत निष्पादन को अंतिम निर्धारण के लिए वार्षिक परीक्षा निष्पादन के साथ-साथ उचित महत्व दिया जाना चाहिए।

वार्षिक परीक्षाएँ

विद्यार्थी ने क्या सीखा है? और जो कुछ उसने सीखा है क्या वह सही है या गलत है, इसकी भी जानकारी सत्र के अंत में वार्षिक परीक्षा द्वारा प्राप्त की जा सकती है। इस परिणाम का प्रयोग रैंक निर्धारित करने, डिवीजन प्रदान करने, अगले कक्षा में चढ़ाने (प्रोमोशन) तथा मार्गदर्शन के लिए किया जा सकता है।

चूंकि वार्षिक परीक्षा सत्र के अंत में आयोजित की जाती है, अतः इस परीक्षा के परिणामों का कक्षा में शिक्षण की प्रभावी योजना तैयार करने अथवा छात्र द्वारा प्रभावी अधिगम के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता।

11.9 समंकों संबंधी रिपोर्ट देना

दत्त कार्य, आवधिक और वार्षिक परीक्षाएँ विद्यार्थी को समंक देने के लिए प्रमुख आधार होती है। समंक अनुदेशात्मक उद्देश्यों की उपलब्धि का एक माप हैं।

समंकों की रिपोर्ट तैयार करने की सर्वाधिक ज्ञात पद्धति प्रगति रिपोर्ट तैयार करना है। प्रगति रिपोर्ट में समंक ग्रेड और जाँच-सूची मद होते हैं। ग्रेड अथवा समंक उपलब्धि के स्तर को बताते हैं और जाँच-सूची मद गैर-शैक्षिक क्षेत्रों जैसे चरित्र नियमितता, रुचि, अभिवृत्ति और सामाजिक विकास में निष्पादन का उल्लेख किया जाता है।

11.10 प्रगति रिपोर्ट का महत्व

इस समय विद्यालयों में शैक्षिक प्रगति संबंधी रिपोर्ट और विभिन्न शैक्षिक और गैर-शैक्षिक गतिविधियों में प्राप्त समंकों पर बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है। यह विद्यार्थी के शैक्षिक और व्यावसायिक भविष्य के संबंध में महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए एक प्रमुख आधार होता है। मूल्यांकन के परिणाम विद्यार्थी, अभिभावकों, शिक्षकों, प्रशासकों और नियोक्ताओं के लिए विद्यार्थी के बारे में शैक्षिक और व्यवसायी निर्णय लेने में अनेक प्रकार से उपयोगी होते हैं।

प्रगति रिपोर्ट द्वारा एक सामान्य स्थिति स्पष्ट की जाती है कि विद्यार्थी किस प्रकार पढ़ रहा है और उसकी अधिगम प्रगति कैसी है। रिपोर्ट में विद्यार्थी की अधिगम में शक्तियों और कमज़ोरियाँ, उसकी रुचि तथा अभिवृत्ति, मूल्यों और व्यक्तिगत सामाजिक विकास के बदलते हुए प्ररूपों को दर्शाया जाना चाहिए।

प्रगति रिपोर्ट का प्रयोग

विद्यार्थियों के लिए

इन सभी शैक्षिक और गैर-शैक्षिक क्षेत्रों के सतत मूल्यांकन के परिणाम दर्शाने वाली प्रगति रिपोर्ट विद्यार्थियों के अधिगम के लिए प्रेरणा का आधार होती है। इससे अध्ययन संबंधी आदतों और गलतियों में सुधार लाने के लिए सहायता मिलती है।

इससे अध्ययन के प्रमुख और सामान्य पाठ्यक्रमों (विज्ञान/ कला/ वाणिज्य/ व्यावसायिक), का चयन करने तथा यह निर्णय लेने के लिए सहायता मिलती हैं कि क्या बच्चे की औपचारिक शिक्षा को बंद कर दिया जाए अथवा चालू रखा जाए।

अभिभावकों के लिए

प्रगति रिपोर्ट में विद्यार्थी की विभिन्न अधिगम गतिविधियों संबंधी प्रगति के संबंध में स्पष्ट जानकारी होती है जो अभिभावकों के लिए सूचना का ऐसा महत्वपूर्ण स्रोत होती है जिसके आधार पर वह अपने बच्चे की भावी शिक्षा तथा/ अथवा व्यावसायिक अभिवृत्ति के संबंध में निर्णय ले सकते हैं। प्रगति रिपोर्ट में दिए गए मूल्यांकन संबंधी परिणामों के आधार पर अभिभावक अपने बच्चे की संभावित सफलता का अनुमान लग सकते हैं और उसी के आधार पर यह निर्णय लेते हैं कि वह उनका अध्ययन जारी रखें या नहीं, तथा इसी के आधार पर उसके शैक्षिक अथवा व्यावसायिक अभिवृत्ति का चयन भी करते हैं।

शिक्षकों के लिए

मूल्यांकन की रिपोर्ट शिक्षकों के लिए उन प्रकरणों/यूनिटों का पता लगाने के लिए हैं जो अधिकांश छात्रों के लिए कठिन हैं और उसके अनुसार शिक्षण संबंधी कार्यनीति के लिए योजना तैयार करने में उपयोगी होते हैं। परामर्शदाता (काउंसिलर) अन्य सूचनाओं के साथ-साथ वर्तमान और पिछली प्रगति रिपोर्टों का इसलिए प्रयोग करते हैं ताकि वे छात्रों में आत्मबोध को विकसित कर सकें और उन्हें अधिक उपयुक्त शैक्षिक और व्यावसायिक वृत्ति का चयन करने में सहायता कर सके।

प्रशासन के लिए

प्रत्येक प्रगति रिपोर्ट बहुत सारे प्रशासनिक प्रयोजनों को भी पूरा करती है। इसका उपयोग रैंक, ग्रेड निर्धारण, डिवीजन, उसी स्कूल में तथा अन्य शैक्षिक संस्था में अगली कक्षा में भेजने का निर्णय लेने में किया जाता है। प्रत्येक स्कूल व कालेज़ में सुविधाएँ सीमित होती हैं। वे सभी स्वयं प्रवेश परीक्षा लेने की व्यवस्था नहीं कर सकते। वे उच्च अध्ययन में प्रवेश के आधार स्वरूप उन्हीं समंकों को लेते हैं और उन्हें प्रवेश के पश्चात् विद्यार्थी की प्रगति का सूचक मानते हैं।

नियोक्ताओं द्वारा

स्कूल द्वारा विद्यार्थी के संबंध में स्कूल के विद्यार्थियों के संभावी नियोक्ताओं को सूचना उपलब्ध करानी चाहिए। नियोक्ता अपनी अपेक्षा के अनुसार सर्वोत्तम कार्य उपलब्धि के लिए सर्वाधिक उपयुक्त आवेदक का चयन करने के लिए प्रगति रिपोर्ट में दी गई संगत सूचना और अंकों का प्रयोग कर सकते हैं।

प्रायः नियोक्ता शैक्षिक और गैर-शैक्षिक क्षेत्रों में और मुख्यतः पाठ्य सहगामी कार्यकलापों और उसके व्यक्तित्व के अन्य पहलुओं में निष्पादन के संबंध में सूचना प्राप्त करना चाहते हैं।

इस प्रकार आप देखते हैं कि मूल्यांकन संबंधी रिपोर्टों में विभिन्न शैक्षिक विषयों में विद्यार्थी के निष्पादन संबंधी सूचना के साथ-साथ गैर-शैक्षिक क्षेत्रों जैसे रुचि, अभिवृत्ति, कार्य-अभ्यास आदि संबंधी सूचना भी दी जानी चाहिए।

11.11 समंकों की व्याख्या

छात्र के समंकों या ग्रेडों का उल्लेख करते हुए मात्र रिपोर्ट के माध्यम से ही उसकी शैक्षिक उपलब्धि को बताना अपेक्षाकृत संतोषजनक तरीका नहीं है, जो न उसके अपने और न ही किसी और के लिए उपयोगी होता है। जहाँ तक विद्यार्थी का संबंध है उसके रिकार्ड का अर्थ महत्वपूर्ण है, न कि यथा प्राप्त समंक। मानकीकृत परीक्षा के समंकों के लिए यह और अधिक सत्य है कि हमें छात्र को यथा प्राप्त समंकों के स्थान पर उन समंकों की व्याख्या उपलब्ध करानी चाहिए।

परीक्षा निष्पादन की व्याख्या का सर्वाधिक व्यापक प्रयोग और आसानी से समझे जाने वाला तरीका शततमक रैंक प्रदान करना है। शततमक रैंक या समंक विद्यार्थी की उससे कम समंक लेने वाले विद्यार्थियों की किसी समूह में सापेक्ष स्थिति का द्योतक है, जो बताता है कि उससे नीचे समंक प्राप्त करने वाले कितने प्रतिशत विद्यार्थी हैं। 70 के शततमक रैंक का अभिप्राय है कि ग्रुप के 70% विद्यार्थियों से उसका निष्पादना ऊपर है।

किसी समूह में विद्यार्थी की सापेक्ष स्थिति दर्शाने की एक अन्य पद्धति भी है जिसमें दर्शाया जाता है कि उसका यथा प्राप्त समंक समूह-माध्य से कितना ऊपर या नीचे है। यह ऐसा उपागम है जिसका प्रयोग मानकीकृत समंकों से किया जाता है, परीक्षण निष्पादन को माध्य से मानक परीक्षण विचलन की इकाइयों द्वारा व्यक्त किया जाता है।

11.12 विद्यार्थियों की पार्श्विका (प्रोफाइल)

ऊपर बताए गए दो प्रकार के व्युसन्न समंक बिल्कुल भिन्न परीक्षणों से प्राप्त समंकों को एक ही प्रकार की इकाइयों में व्यक्त केरने का साधन है जिससे उन परीक्षण समंकों की प्रत्यक्ष रूप से तुलना की जा सकती है।

किसी एक व्यक्ति के भिन्न-भिन्न परीक्षणों के अंकों के सेट को जो एक जैसी इकाइयों में व्यक्त हो विद्यार्थी की प्रोफाइल (पार्श्विका) कहा जाता है। भिन्न-भिन्न परीक्षणों से प्राप्त अंकों को सारणी के रूप में या आलेखीय निरूपण द्वारा जैसा सारणी 1 में दिया गया है तुलना के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

विद्यार्थी द्वारा प्राप्त विभिन्न परीक्षण समंकों को एक ही मापन इकाई के आधार पर व्युसन्न समंकों के रूप में संकेतित किया जाता है जैसा कि सारणी में शततमक रैंकों के रूप में उल्लेख किया है। इससे विद्यार्थियों के विभिन्न परीक्षणों में निष्पादन की सीधे तुलना की जा सकती है:

सारणी -1 : विद्यार्थी की प्रोफाइल

विषय	हिंदी	अंग्रेजी	गणित
यथा प्राप्त समंक	70	30	85
शततमक	75	40	65

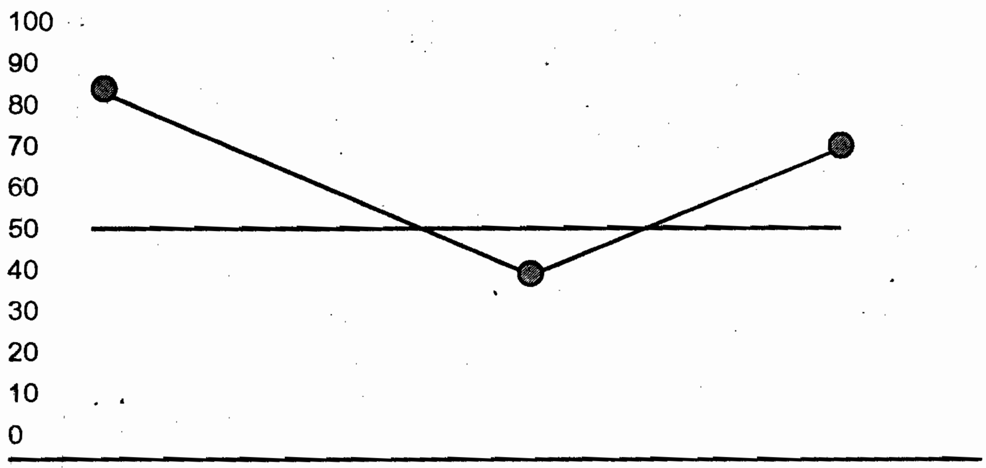

विद्यार्थी के यथा प्राप्त अंक यह दर्शातें हैं कि वह हिंदी की बजाए गणित में अच्छा है। परंतु जब हम उसके शतमक समंकों की तुलना करते हैं तो पता चलता है कि वह गणित की अपेक्षा हिंदी में कुछ अच्छा है।

11.13 संचयी अभिलेख

क्योंकि मूल्यांकन के परिणाम विद्यार्थियों के भाग्य का निर्णय करने में महत्वपूर्ण है, अतः परीक्षण के समंकों को एक व्यवस्थित ढ़ंग से अभिलेखित किया जाए। परिणाम विभिन्न प्रयोक्ताओं को उपलब्ध कराने की सुविधा भी अवश्य होनी चाहिए।

संचयी रिकार्डों में शैक्षिक परीक्षण परिणाम तथा विद्यार्थियों के विषय में अन्य प्रकार की सूचनाएँ जैसे गैर-शैक्षिक उपलब्धि जो उनके व्यक्तित्व को दर्शाने के लिए अनिवार्य है, मार्गदर्शन पक्ष आदि सम्मिलित होते हैं।

विभिन्न शैक्षिक और गैर-शैक्षिक अधिगम संबंधी कार्यकलापों में परीक्षा संबंधी कार्यक्रम और उनकी रिकार्ड संबंधी पद्धतियाँ स्थानीय मामले हैं; और इसलिए यह एक विद्यालय से दूसरे विद्यालय के लिए भिन्न-भिन्न होते हैं। अथवा एक क्षेत्र के एक विद्यालय में तथा दूसरे क्षेत्र के विद्यालयों में भिन्न-भिन्न होते हैं। रिकार्डो के संबंध में महत्वपूर्ण यह नहीं है कि उनमें क्या-क्या रिकार्ड किया गया है, बल्कि महत्वपूर्ण यह है कि उन रिकार्डों से कितनी सूचना प्राप्त की जा सकती है। बच्चों के व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए रिकार्डों का किस प्रकार उपयोग किया जा रहा है यह सर्वाधिक अनिवार्य तत्व है।

रिकार्डों में क्या कुछ सूचना शामिल की जाए? ऐसी अनेक प्रकार की सूचनाएँ हैं जिन्हें रिकार्डों में सुव्यवस्थित रूप से शामिल किया जाना चाहिए। इनमें से कुछ सूचनाएँ नीचे दी गई हैं :

i) वैयक्तिक जीवन वृत्त

ii) शैक्षिक उपलब्धियाँ

iii) शारीरिक स्वास्थ्य

iv) पाठ्य सहगामी कार्यकलाप तथा चरित्र निर्माण संबंधी मूल्य

v) आदतें, अभिरुचियाँ तथा अभिवृत्तियाँ

विद्यार्थी का जीवनवृत्त

1. नाम .... पंजीकरण संख्या ....

   कक्षा .... लिंग ....

   जन्मतिथि

   (शब्दों में) | | | | | | | | | | |

   प्रवेश की तारीख

   विद्यालय छोड़ने की तारीख

पारिवारिक विवरण (पृष्ठभूमि)

1. पिता का नाम
2. माता का नाम
3. क) पिता का व्यवसाय

   ख) माता का व्यवसाय
4. परिवार की मासिक आय
5. माता-पिता की शैक्षिक पृष्ठभूमि :
   (पास की गई सबसे उच्च परीक्षा का उल्लेख करें)

पिता .... माता ....

स्थायी पता ....

.... पिन कोड | | | | | | |

6.

इससे पूर्ववर्ती विद्यालय	प्रवेश संख्या	वर्ष		विद्यालय परिवर्तन के कारण
		से	तक	

शैक्षिक उपलब्धि

विषय	कक्षा-VI ग्रेड		कक्षा-VII ग्रेड		कक्षा-VIII ग्रेड		कक्षा-IX ग्रेड		कक्षा-X ग्रेड		कक्षा-XI ग्रेड		कक्षा-XII ग्रेड	
	बी यू BU	सी टीटी CTT	बीयू BU	सी टीटी CTT	बीयू BU	सी टीटी CTT	बीयू BU	सी टीटी CTT	बीयू BU	सी टीटी CTT	बीयू BU	सी टीटी CTT	बीयू BU	सी टीटी CTT
1. भाषाए														
i)														
ii)														
iii)														
2. मुख्य विषय														
i) विज्ञान														
ii) सामाजिक विज्ञान														
3. वैकल्पिक														
i)														
ii)														
iii)														
4. अन्य विषय														
i) समाजोपयोगी कार्य (SUPW)														
ii) शारीरिक शिक्षा														
iii) कला														
iv) संगीत														

कक्षा अध्यापक के हस्ताक्षर

टिप्पणी : बी यू : 4 सर्वोत्तम इकाईयों हेतु , सी टी टी : सत्र परीक्षाओं में संयुक्त ग्रेड हेतु

BU : Four Best Units. CTT : Combined grade in Term Tests.

शारीरिक स्वास्थ्य

विषय	कक्षा-VI		कक्षा-VII		कक्षा-VIII		कक्षा-IX		कक्षा-X		कक्षा-XI		कक्षा-XII	
विवरण	I	II	I	II	I	II	I	II	I	II	II	I	I	II
1. कद से.मी. में														
2. वजन कि.ग्रा. में														
3. कद वजन अनुपात का ग्रेड														
4. छाती : सामान्य फुलाव के पश्चात														
5. छाती के फुलाव का ग्रेड														
6. शारीरिक दोष या बीमारी (कान, आंख, नाक, दांत, त्वचा आदि) यदि कोई हो														
7. गंभीर अथवा पुरानी बीमारी का नाम तथा बीमारी की अवधि														
8. ब्लड ग्रुप														
9. स्वास्थ्य की सामान्य स्थिति का ग्रेड														
10. की गई अनुवर्ती कार्रवाई														
i) विद्यालय में														
ii) अभिभावकों द्वारा														
स्टाफ नर्स के हस्ताक्षर														
डाक्टर के हस्ताक्षर														

पाठ्य सहगामी कार्यकलाप और चरित्र निर्माण संबंधी मूल्य

कार्यकलाप जिनमें भाग लिया	कक्षा VI	कक्षा VII	कक्षा VIII	कक्षा IX	कक्षा X	कक्षा XI	कक्षा XII
साहित्यिक और सांस्कृतिक							
1.							
2.							
3.							
4.							
क्रीड़ा और खेलकूद							
1.							
2.							
3.							
4.							
एन सी सी/ स्काउट							
1.							
वैज्ञानिक							
1.							
2.							
3.							
4.							
चरित्र निर्माण संबंधी मूल्य							
1.							
2.							
3.							
4.							
5.							
अध्यापकों के हस्ताक्षर							
प्रधानाचार्य के हस्ताक्षर							

टिप्पणी : 75% और इससे अधिक = A ग्रेड

55 से 74 तक = B ग्रेड

40 से 54 तक = C ग्रेड

40 से कम = D ग्रेड

आदतें, रुचियों तथा अभिवृत्तियाँ

विषय	कक्षा VI	कक्षा VII	कक्षा VIII	कक्षा IX	कक्षा X	कक्षा XI	कक्षा XII
आदतें							
स्वास्थ्य संबंधी							
अध्ययन संबंधी							
कार्य संबंधी							
अभिरुचियाँ							
साहित्यिक							
कलात्मक							
सांगीतिक							
वैज्ञानिक							
समाज सेवा							
अभिवृत्तियाँ							
अध्ययन के प्रति							
अध्यापक के प्रति							
माता-पिता के प्रति							
विद्यालय के कार्यक्रम के प्रति							
विद्यालय की संपत्ति के प्रति							
कक्षा अध्यापक के हस्ताक्षर							

प्रस्तुत रिकार्ड एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा तैयार किए गए संचयी रिकार्ड का नमूना है। इसकी नवोदय विद्यालयों में प्रयोग के लिए सिफारिश की गई है। (यह प्रत्येक विद्यार्थी के संबंध में रिकार्ड की गई सूचना तथा उनकी अवधि के संबंध में, ब्यौरे उपलब्ध कराता है।)

सामान्य सिद्धांत के रूप में शैक्षिक उद्देश्यों को प्रभावी रूप से लागू करने और विद्यार्थी की सही स्थिति को प्रस्तुत करने के लिए उपयोगी कोई भी सूचना रिकार्ड में शामिल की जानी चाहिए। तथापि हमें यह सावधानी भी बरतनी चाहिए कि अपनाई गई कोई कार्य पद्धति अध्यापकों के लिए बहुत अधिक बोझिल न बन जाए। रिकार्ड रखना अपने आप में साध्य नहीं है। छात्र के मार्गदर्शन, शिक्षण संबंधी कार्यनीति के सुधार, स्कूल में उपलब्ध संसाधनों का मितव्ययी उपयोग तथा छात्र के सही निर्धारण के लिए रिकार्ड का प्रयोग किया जाना ही रिकार्ड रखने का एक प्रमुख उद्देश्य होता है।

11.14 सारांश

शैक्षिक उद्देश्यों का लक्ष्य व्यक्ति का समग्र विकास करना होता है। अतः किसी शैक्षिक कार्यक्रम की अपेक्षित अधिगम निष्पत्तियाँ केवल शैक्षिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। अपितु इनमें गैर-शैक्षिक क्षेत्रों को भी शामिल किया जाना चाहिए।

प्रत्येक पाठ्यक्रम शिक्षार्थी की ओर से अपेक्षित विशिष्ट शैक्षिक उद्देश्यों को निर्धारित करता है। इसमें विभिन्न शैक्षिक तथा गैर-शैक्षिक कार्यकलापों को शामिल किया जाता है। मूल्यांकन, अनुदेशों के साथ-साथ ही किया जाना चाहिए। इसलिए यह एक सतत प्रक्रिया के रूप में होनी चाहिए।

शैक्षिक उद्देश्य शिक्षण कार्यनीतियों के चयन को निर्धारित करते हैं इसी प्रकार यह ऐसे उद्देश्य हैं जो मूल्यांकन के साधनों जैसे दत्त कार्य (एसायनमैंट), निर्धारण के लिए प्रयोग की जाने वाली आवधिक और वार्षिक परीक्षाएँ आदि के स्वरूप को निर्धारित करते हैं। किसी विद्यार्थी के निर्धारण का स्तर कुछ भी हो रिकार्ड तैयार करने और रिपोर्ट देने की पद्धति बहुत ही महत्वपूर्ण समझी जानी चाहिए ताकि मूल्यांकन के परिणामों का विभिन्न प्रयोक्ताओं द्वारा सार्थक रूप में प्रयोग किया जा सके।

11.15 अभ्यास कार्य

1. अपनी इच्छा के अनुसार किसी विषय की शिक्षण इकाई को चुने। आप अपने विद्यार्थियों को कितने अलग-अलग प्रकार के दत्त कार्य देना चाहेंगे?
2. मूल्यांकन परिणामों के विभिन्न प्रयोक्ताओं के लाभ के लिए विद्यार्थी के संबंध में आप क्या सूचना रिकार्ड में देना चाहेंगे?
3. आप अपने विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए कौन से गैर-शैक्षिक विषयों का मूल्यांकन करना चाहेंगे?
4. बेहतर शिक्षण और बेहतर अधिगम के लिए सतत मूल्यांकन किस प्रकार सहायता करता है?
5. दत्त कार्य लिखित प्रश्न से किस प्रकार भिन्न है?
6. आवधिक परीक्षाएँ और वार्षिक परीक्षाएँ क्यों ली जाती हैं?

11.16 चर्चा के बिंदु

1. अधिकांश विद्यालय इस समय विद्यार्थियों के अधिगम के गैर-शैक्षिक विषय के विकास पर पूरा ध्यान नहीं दे रहे हैं इसके कारण बताओ? इस समस्या के समाधान के लिए अपने सुझाव दें।
2. आप ऐसी किसी कार्य-नीति की योजना तैयार करना चाहेंगे जिससे मूल्यांकन के परिणामों का विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों, प्रशासकों नियोक्ताओं द्वारा कारगर रूप से प्रयोग किया जा सके।
3. आप विद्यार्थी के सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के परिणामों को रिकार्ड करने में किस प्रकार की समस्याओं का सामना करते हैं।

11.17 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. यह शिक्षार्थी की शैक्षिक और गैर-शैक्षिक उपलब्धियों का निर्धारण करने में सहायता करता है।
2. सतत मूल्यांकन शिक्षण, अधिगम प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थी में होने वाले वांछनीय परिवर्तनों का निर्धारण करने का सतत प्रयास है। इसकी प्रमुख भूमिका शिक्षण-अधिगम

प्रक्रिया को सार्थक बनाना है। सतत निर्धारण के आधार पर यह कमियों को दूर करने में सहायता करती है और उनके लिए सुधारात्मक उपाय उपलब्ध कराता है।

2. अपने विषय में एक प्रकरण का चयन करें उसके लिए दत्त कार्य तैयार करे उसे लिखें और उसका प्रयोजन स्पष्ट करें।

11.18 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Gronlund, N.F. (1981) : *Measurement and Evaluation in Teaching*, Macmillan: New York.

Grolund, N.E. (1974) : *Improving Marking and Reporting in Classroom Instructions*, Macmillan : New York.

Srivastava, H.S. (1989) : *Comprehensive Evaluation in Schools*, NCERT : New Delhi.

Singh, P. (1989) : *Scheme of Continuous Comprehensive Evaluation for Navodaya Vidyalayas*, MHRD : New Delhi.

Srivastava, H.S. and Pritam Singh (1977) : *Use of Test Material in Teaching*. NCERT: New Delhi.

National Council of Educational Research and Training, (1967) : *Scheme of Comprehensive Internal Assessment*, Rajasthan Board of Secondary Education: Ajmer.

NOTES